सफलता की कहानियां

लाहौल-स्पीति

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

—हिमाचल सरकार—

मार्गदर्शन

निशा सिंह (भा.प्र.से.)
अतिरिक्त मुख्य सचिव
(कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य पालन)

राकेश कंवर (भा.प्र.से.)
विशेष सचिव (कृषि) एवं
राज्य परियोजना निदेशक

संकलन एवं संपादन

प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

रमन कान्त
उप-संपादक

तकनीकी सहयोग

डॉ० मनोज गुप्ता
प्रधान वैज्ञानिक, कृषि अर्थशास्त्र

डॉ० दिग विजय शर्मा
उप-निदेशक कृषि

इकबाल ठाकुर
मीडिया सलाहकार

डॉ० सुरेन्द्र चंदेल
कृषि प्रसार अधिकारी

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हमारे राज्य को 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहां का किसान–बागवान मेहनतकश, ईमानदार तथा नई तकनीक की स्वीकार्यता हेतु हमेशा तत्पर रहता है। प्रदेश के इन्हीं किसान–बागवानों के कारण आज हमें देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है। मौसमी–बेमौसमी सब्जी उत्पादन में भी 7,500 करोड़ से अधिक की आय प्रदेश आज अर्जित कर रहा है। लेकिन इस बढ़ती खुशहाली में किसान का खेत से प्रवासन, कीटनाशकों एवं अन्य खेती रसायनों का बढ़ता एवं अंधाधुंध प्रयोग, बढ़ती कृषि–बागवानी लागत और भोजन व फल–सब्जी में पाए जाने वाले इन रसायनों के अंश प्रदेश के सामने एक चुनौती भी पेश कर रहे हैं। साथ ही 2022 तक किसान–बागवान की आय दोगुनी करने का मा० प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना भी हमें पूरा करना है। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के शुभारम्भ से हमारी सरकार ने यह पहल आरम्भ कर दी है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से बड़ी तीव्र गति से खेती संरक्षण एवं किसान आय वृद्धि हेतु एक व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। लाहौल–स्पीति जिला में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की सफलता की कहानियों का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे पूर्ण आशा है कि परियोजना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में यह सफल किसान अपने–2 गांव तथा पंचायत में 'प्राकृतिक खेती' के इस अभियान को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। जिला में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' अभियान से जुड़े कृषि अधिकारियों और किसानों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

–जयराम ठाकुर

हिमाचल प्रदेश सरकार

कृषि, पशुपालन, मत्स्य, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हिमाचल प्रदेश सरकार की अति महत्वाकांक्षी योजना 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' के अंर्तगत जिस तरह से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को अपनाने हेतु किसान–बागवान रूचि दिखा रहे हैं, यह निश्चय ही प्रदेश के लिए बहुत उत्साहवर्धक है। पिछले ढाई वर्षों में लगभग 1,05,218 किसान–बागवानों का 2,957 पंचायतों में प्राकृतिक खेती से जुड़ना यह आभास दिलाता है कि प्रदेश के सभी कृषि–भौगोलिक क्षेत्रों में, हर फसल तथा फलों पर किसान–बागवानों ने इस पद्धति को अपनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार कर लिया है।

इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई'(SPIU) द्वारा विभिन्न फसलों तथा फलों के उत्पादन, कीट–बीमारी प्रबंधन तथा किसान आय वृद्धि इत्यादि मानकों पर एकत्र किए आंकड़े निश्चित रूप से इस योजना की अपार सफलता को बयान कर रहे हैं। प्रदेश में किसानों का खेती खर्च घटाने, बिना कृषि रसायनों के फसल उत्पादन कर किसान आय दोगुनी करने तथा प्रदेश के जल–जमीन एवं पर्यावरण को समृद्ध बनाने हेतु इस योजना का कार्यान्वयन एक सुखद तथा अनुकरणीय पहल है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़े सफल किसानों के अनुभव, उनके खर्चे में आई कमी तथा आय में वृद्धि जैसे मुख्य बिंदुओं का संकलन एवं प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। नए किसान–बागवानों की जागरूकता एवं शिक्षण हेतु ऐसे संकलन एक प्रेरणा का काम करेंगे। मेरी इन सभी किसान–बागवानों को शुभकामनाएं तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) को उनके विविध एवं सफल प्रयासों हेतु बधाई।

–वीरेन्द्र कंवर

अतिरिक्त मुख्य सचिव
(कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य पालन)
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

सतत् एवं स्थाई कृषि विकास में प्राकृतिक कृषि का अपना स्थान है। यह गर्व का विषय है कि इस क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश का उल्लेख होना हमारे लिए गर्व की बात है। प्रदेश के किसान – बागवान न केवल मेहनती एवं प्रगतिशील हैं, बल्कि वर्तमान खेती व्यवस्था से जुड़े विषयों मिट्टी का स्वास्थ्य, धरती में पानी की उपलब्धता, पर्यावरण संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य जैसे ज्वलंत मुद्दों के प्रति संवेदनशील भी हैं। यह आवश्यक है क्योंकि खेती – बागवानी में बढ़ते रसायनों के प्रयोग से साल – दर – साल बढ़ती खेती की लागत तथा अस्थिर होता उत्पादन एक चिंता का विषय बनता जा रहा है।

कृषि को किसान के लिए हितकारी बनाने का लक्ष्य लेकर प्रदेश सरकार ने 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाने का नीतिगत फैसला लिया है। इस विधि की निरंतर सफलता ने यह सिद्ध किया है कि किसानों की आय बढ़ाने और उनके दीर्घकालिक कल्याण के लिए यह विधि एक सशक्त विकल्प है। वर्तमान में उपलब्ध आंकड़ों से यह प्रतीत हो रहा है कि स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हुए किसान – बागवान कम खेती लागत और कम पानी का प्रयोग करके भूमि की उर्वरता को लगातार बरकरार रखते हुए अच्छी उपज ले रहे हैं।

प्रदेश के मा० मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन एवं मा० कृषि एवं पशुपालन मंत्री जी के नेतृत्व में सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने इस परियोजना के कार्यान्वयन व निगरानी के साथ तय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गम्भीर एवं सार्थक प्रयास किए हैं। आंकड़ों के अनुसार प्रदेश भर में 1,05,218 किसानों ने इस विधि को आंशिक या पूर्ण रुप से अपनाकर इस नई पहल की सार्थकता को स्थापित किया है।

जून 2018 में योजना के प्रारंभ होने के बाद से प्रदेश भर से किसानों की सफलता की कहानियां प्राप्त हो रही हैं। मुझे आशा है कि सफलता की कहानियों का यह सिलसिला लक्षित समय में प्रदेश को रसायनमुक्त करेगा। लाहौल – स्पीति की इन कहानियों का प्रकाशन विशेष प्रसन्नता का विषय है। 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' को इस संकलन एवं प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

– निशा सिंह

विशेष सचिव, कृषि
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

देशभर में कृषि क्षेत्र में आई हरित क्रान्ति के दुष्प्रभाव आज समाज और जीवन पर पड़ते स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं। भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास, किसानों की बढ़ती खेती लागत, घटता या स्थिर होता उत्पादन तथा अन्ततोगत्वा किसान का खेती–बागवानी से हटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन चिन्ता का विषय बन गया है। हमारा राज्य हिमाचल प्रदेश भी इन दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। रसायनिक खेती के इन प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों के निदान हेतु 'जैविक खेती' का विकल्प भी सार्थक सिद्ध नहीं हुआ। 'जैविक खेती' का आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव इस विधि को अधिक खर्चीला बना रहा है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अन्तर्गत पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित खेती विधि क्रियान्वयन द्वारा पिछले ढाई वर्ष के छोटे से अन्तराल में 1,05,218 से अधिक किसान–बागवानों ने अपने–2 खेत–बागीचों में इस खेती विधि के मॉडल खड़े कर लिए हैं। यह हिमाचल प्रदेश की खेती को रसायनमुक्त करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। इस परियोजना के संचालन का कार्य 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' के माध्यम से पूरे प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी तन्मयता से ध्येयपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

लाहौल–स्पीति जिला के सफल किसानों के खेती विवरण का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रयास से अन्य प्राकृतिक खेती किसान भी अपने आप को सफल किसान के रूप में लाने का प्रयत्न करेंगे। मेरी जिला के सभी किसानों के लिए शुभेच्छा।

–राकेश कंवर

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश को देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त है। पिछले दो दशकों में प्रदेश ने बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में भी अपनी पहचान बनाई है। आज प्रदेश से लगभग 7,500 करोड़ की फल – सब्जियां देश के विभिन्न राज्यों में जा रही हैं। लेकिन स्थिर होती फसल उत्पादकता और बढ़ती कृषि – बागवानी लागत, किसान – बागवान के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार प्रदेश में खेती रसायनों के बढ़ते दुरूपयोग के कारण हर 5वां फल – सब्जी इत्यादि का नमूना कीटनाशक – फफूंदनाशक अवशेष ग्रसित है, 3 से 4% फल – सब्जियों इत्यादि के नमूनों में कीटनाशक – फफूंदनाशकों की अवशेष मात्रा अधिकतम तय सीमा से ऊपर मिल रही है जो देशभर के आंकड़ों से लगभग 1% अधिक है। खेती – बागवानी की यह परिस्थिति किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए गम्भीर चिंता का विषय बनती जा रही है।

देश का किसान आज एक ऐसी व्यावहारिक खेती विधि की तलाश में है जिससे उसकी कृषि लागत घटे और उत्पादकता तथा आय में वृद्धि हो। 'जैविक खेती' के रूप में प्रचारित वैकल्पिक विधि ने आम किसान का उत्पादन तो घटाया ही, साथ ही रसायनिक खेती के अनुपात में कृषि लागत को भी अधिक बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'किसान की आय दोगुनी' करने हेतु फरवरी 2018 में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना प्रारम्भ कर इस दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के किसान – बागवानों को 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' विधि में प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारक संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह संदर्भित किया है कि 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि किसान की खेती लागत कम करने के साथ फसल उत्पादकता बढ़ाने हेतु सक्षम खेती विधि है, जिसे अपनाकर किसान आय दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा प्रदेश में एक व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है जिसमें विभिन्न गतिविधियों द्वारा एक लाख किसानों को इस वर्ष प्राकृतिक खेती विधि से जोड़ा जा रहा है। साथ ही अन्य एक लाख किसानों को विभिन्न माध्यमों द्वारा इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। अभी तक प्रदेश भर में कुल 1,00,615 किसान प्रशिक्षित किए गए हैं और 1,05,218 ने इस पद्धति से पूरी या आंशिक रूप से खेती करना आरंभ कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी और किसान इनके मॉडल फार्म पर भ्रमण कर रहे हैं।

इस प्राकृतिक विधि का जो किसान पूरी तरह प्रशिक्षित होकर प्रयोग कर रहे हैं उनकी सफलता को आंकड़ों सहित इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है, ताकि इन किसानों को प्रोत्साहन मिले और वे दूसरों के लिए भी प्रेरक बनें। भविष्य में ऐसे सफल किसानों की कहानियों को जिलावार प्रदेश के अन्य जिलों में भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

– प्रो॰ राजेश्वर सिंह चंदेल

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती-संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर-रोग-कीट-प्राकृतिक संकट-कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ-साथ किसान-बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाएगा। इन सभी क्रियाओं का इसलिए 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया गया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतु बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. **जीवामृत** किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव-जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. **बीजामृत** देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध-जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत के प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. **आच्छादन** भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. **वापसा** (भूमि में वायु प्रवाह) वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा-तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. **सह-फसल** मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करे।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेतों के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़-पौधों के लिए किसी भी बाहरी रसायनिक खाद की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट-पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण कर फसलों को शत्रु कीट-पतंगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जो इसमें बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहती है।

इस प्राकृतिक खेती की मूल आवश्यकता पहाड़ी या कोई भी भारतीय नस्ल की गाय है। इन नस्लों की गाय के गोबर में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या दूसरी विदेशी किस्म की गायों या अन्य जानवरों की तुलना में 300 से 500 गुणा अधिक है। अत: इस विधि में अधिकतम लाभ लेने के लिए विभिन्न आदान पहाड़ी या किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर तथा मूत्र से बनाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतु एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आतमा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए सन् 2022 तक प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 81 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ट मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 36,15 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

जिला लाहौल-स्पीति - परिदृश्य

हिमाचल प्रदेश के लाहौल–स्पीति का कुल भौगोलिक क्षेत्र 13 ,841 वर्ग किलोमीटर है और क्षेत्रफल के आधार पर यह प्रदेश का सबसे बड़ा जिला है। लाहौल और स्पीति अपनी उंची पर्वत माला के कारण शेष दुनिया से कटा हुआ है। रोहतांग दर्रा 3 ,978 मीटर की उंचाई पर लाहौल और स्पीति को कुल्लू घाटी से पृथक करता है। जिले के पूर्व में तिब्बत, उत्तर में लद्दाख भू–भाग (केन्द्र शासित) और दक्षिण में कुल्लू स्थित है।

लाहौल–स्पीति जिला दो विकास खंडों केलांग तथा काजा में विभाजित है। पुराने समय से ही लाहौल में आलू और मटर की खेती की जाती थी। वर्तमान में यहां पर विदेशी सब्जियों का भारी मात्रा में उत्पादन हो रहा है। जुकुनी, ब्रोक्ली, सलाद पत्ता, फूलगोभी, बन्दगोभी तथा लाल बन्दगोभी की खेती यहां के किसानों की पहली पसंद बन रही है। घाटी के किसानों का रूझान अब धीरे–धीरे सेब की तरफ भी बढ़ रहा है। स्पीति क्षेत्र में पुराने समय में उगाए जाने वाले जौ, काला मटर, मटर, आलू के साथ किसान सब्जियों और फलों के उत्पादन की तरफ भी बढ़ रहे हैं। स्पीति के गांव गियु, ताबो और हुरलिंग में सेब खुमानी और बादाम का उत्पादन किया जा रहा है।

लाहौल–स्पीति भारत के अन्य राज्यों को आलू का गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध करवाता है। यहां के आलू का इस्तेमाल चिप्स बनाने के लिए सबसे बेहतरीन माना जाता है।

विस्तृत विवरण

कुल कृषक
7,451

भाषा एवं बोलियां
हिन्दी, गाहरी, स्वांगला, भोटी

आबादी
31,564

कुल क्षेत्रफल
13,84,100 हैक्टेयर

कृषि योग्य क्षेत्र
4,530 हैक्टेयर

वर्ष 2020-21 में लक्षित प्राकृतिक खेती किसान
200

प्राकृतिक खेती परियोजना के क्रियान्वयन की खण्डवार स्थिति

क्रम सं.	विकास खण्ड	कुल कृषक	प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षित किसान 31 दिसम्बर 2020 तक	प्राकृतिक खेती कर रहे किसान 31 दिसम्बर 2020 तक	प्राकृतिक खेती के अधीन भूमी (बीघा में)
1	केलांग	4,200	1,380	235	269
2	काजा	3,251	422	202	201
	कुल योग	7,451	1,802	437	470

सफल प्राकृतिक खेती किसान

मोती लाल, गांव व पंचायत– मडग्रां, विकास खण्ड केलांग

रामलाल, गांव व पंचायत– शांशा, विकास खण्ड केलांग

चेतन दोरजे, गांव– क्योर, पंचायत– युरनाथ, विकास खण्ड केलांग

अशोक कुमार, गांव– दारचा दांगमा, पंचायत– दारचा सुमदो, विकास खण्ड केलांग

कलजंग लादे, गांव– चिच्चम, पंचायत– किब्बर, विकास खण्ड काजा

तेनजिन नोरबू, गांव– क्वारिंग, पंचायत– युरनाथ, विकास खण्ड केलांग

अंकित डोलमा, गांव– क्युलिंग, पंचायत व विकास खण्ड काजा

विजय कुमार, गांव– हुरलिंग, पंचायत– गियू, विकास खण्ड काजा

बलवीर सिंह, गांव व पंचायत– मडग्रां, विकास खण्ड केलांग

येशे डोलमा, गांव– लिदांग, पंचायत– डैमुल, विकास खण्ड काजा

अशोक कुमार, गांव– पस्परांग, पंचायत– बरवोग, विकास खण्ड केलांग

छेरिंग युरजोम, गांव व पंचायत रांगरिक, विकास खण्ड काजा

छटुप दोरजे, गांव व पंचायत रांगरिक, विकास खण्ड काजा

कलजंग आंग्चुक, गांव– लारा, पंचायत– डैमुल, विकास खण्ड काजा

लोबजंग दोरजे, गांव– मिक्किम, पंचायत– कुंगरी, विकास खण्ड काजा

राजेश, गांव– शूलिंग, पंचायत– खांगसर, विकास खण्ड केलांग

राकेश कुमार, गांव– तांग्ती युग्मा, पंचायत– कुंगरी, विकास खण्ड काजा

आंगद्वी, गांव व पंचायत– डैमुल, विकास खण्ड काजा

साल की पूरी कमाई एक ही फसल पर, फिर भी लिया रिस्क - बढ़ाई पैदावार

मोती लाल - मो. 94184-64234

साल के छह माह तक बर्फ से ढके रहने वाले लाहौल – स्पीति जिला के किसानों की आजीविका एक ही फसल सीजन पर टिकी होती है। इसके बावजूद जिला के मडग्रां पंचायत के मेहनती किसान मोती लाल रसायनों के प्रयोग को त्यागकर प्राकृतिक खेती को अपनी पूरी जमीन में अपनाया और पहले ही साल में पहले से बेहतर परिणाम पाकर सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती की प्रासंगिकता को सार्थक किया है। कबायली जिला के इस किसान का पूरे साल का गुजारा खेती – बाड़ी से ही चलता है। इसकी जानकारी होने के बावजूद मोती लाल ने अपनी पूरी 4 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती विधि को अपनाया। मोती लाल ने बताया कि वे खेती में बढ़ती लागत और मानव स्वास्थ्य में बढ़ती बीमारियों से तंग आ गए थे और पारम्परिक खेती के विकल्प की तलाश में थे। ऐसे में उन्हें कृषि विभाग की आतमा टीम से प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी मिली। इसके बाद मोती लाल ने प्राकृतिक खेती विधि के जनक पद्मश्री सुभाष पालेकर से पालमपुर में छह दिन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रशिक्षण पाने के बाद मोती लाल ने इस खेती को पहले अपने खेतों में अपनाया और अच्छे परिणाम मिलने के बाद अन्य किसानों को भी जागरूक कर इस खेती विधि से जोड़ा। मोती लाल ने बताया कि वे अपनी 4 बीघा जमीन पर मटर, आलू, गोभी, गेंदा, राजमाश, कुठ और सेब की खेती करते हैं। रसायनिक खेती के दौरान इस जमीन पर उनका खर्चा 15 हजार रूपये के करीब आता था, लेकिन अब प्राकृतिक खेती अपनाने के बाद खर्चा 1 हजार रूपये हो गया और पैदावार घटने के बजाये बढ़ रही है जिससे आमदनी में भी बढ़ोतरी हुई है।

इस खेती विधि को अपनाने के बाद मुझे अपने गांव और आसपास की पंचायतों में प्राकृतिक खेती किसान के रूप में पहचान मिली है जिससे मेरे सामाजिक दायरे में मान बढ़ा है।

इस खेती विधि के परिणामों से मैं चकित रह गया हूं। फसलों पर बीमारियां कम आ रही हैं, खर्चा घट गया है और उत्पादन बढ़ रहा है। इस विधि ने मुझे इलाके का प्रतिष्ठित किसान बना दिया है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 4 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 4 बीघा

फसलें एवं फल –
मटर, आलू, राजमाश, कुठ, मनू, गोभी, गेंदा, सेब

रसायनिक खेती – व्ययः 15,000, आयः 1,50,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 1,000, आयः 2,00,000

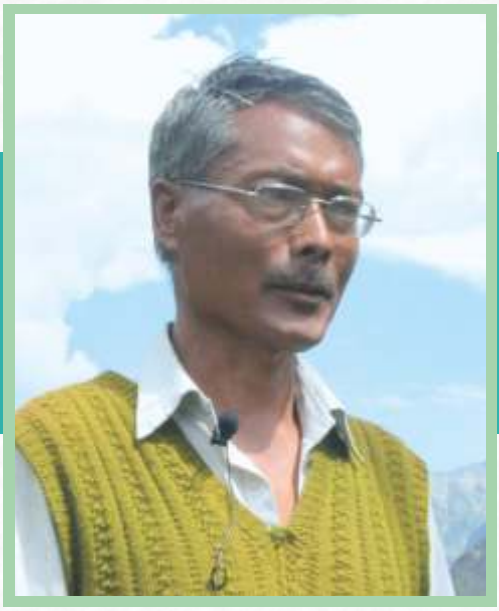

सब्जियों के भार में अप्रत्याशित बढ़ोतरी कॉन्ट्रैक्ट पर लिए खेतों में कर रहे प्राकृतिक खेती

रामलाल - मो. 94594-76434

लाहौल – स्पीति जिला के शांशा गांव के किसान रामलाल ने उन किसानों के लिए उदाहरण पेश किया है जिनके पास या तो कम भूमि है या फिर वे भूमिहीन हैं। रामलाल के पास अपनी जमीन कम थी इसलिए उन्होंने लीज पर भूमि ली और इसमें सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि से खेती कर अपने खेती खर्च को कम कर मुनाफे को बढ़ाने में सफलता पाई है। रामलाल का कहना है कि उन्होंने दो साल पहले प्राकृतिक खेती के जन्मदाता पद्मश्री सुभाष पालेकर से पालमपुर में 6 दिन का प्रशिक्षण लिया था। इसके बाद मैंने उनके बताए तरीके के अनुसार खेती शुरू की जिसमें मुझे बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले।

रामलाल ने बताया कि वे गोभी, मटर, आलू, गाजर, टमाटर और लैट्यूस की खेती करते हैं। जब से उन्होंने प्राकृतिक खेती को अपनाया है तब से खेतों की मिट्टी की सेहत में सुधार होने के साथ सब्जियों के वजन और रंग में बेहद सुधार देखा जा रहा है। रामलाल ने बताया कि उनकी गोभी की पेटी का वजन अब दूसरे किसानों के मुकाबले 7 – 10 किलोग्राम तक अधिक होता है। उन्होंने बताया कि मैंने एक प्रयोग किया जिसमें मैंने एक खेत में रासायनिक खादों को प्रयोग कर आइसबर्ग उगाया। इस खेत पर मैंने पाया कि आइसबर्ग की चार पेटियों का भार 60 किलोग्राम रहा जबकि इसकी तुलना में जब मैंने प्राकृतिक विधि से उगाए आईसबर्ग की चार पेटियों का भार किया तो उसका भार 70 – 75 किलोग्राम के बीच रहा है। इस सफल किसान का कहना है कि प्राकृतिक विधि से उगाई सब्जियां जल्दी खराब नहीं होती हैं और उनमें टिकाऊपन भी अधिक है।

रामलाल की देखा – देखी में अब उनके गांव के 10 अन्य किसान भी प्राकृतिक खेती विधि के प्रति आकर्षित होकर इसे अपना चुके हैं। रामलाल का कहना है कि वे किसानों को इस खेती विधि के बारे में जानकारी देने के साथ इसमें प्रयोग होने वाले आदान भी बनाकर दे रहे हैं।

मैंने प्रत्यक्ष तौर पर देखा है कि जीवामृत के छिड़काव से गोभी पर आने वाले कीड़े भाग गए। बाकी आदानों के इस्तेमाल से फसलों की गुणवत्ता और स्वाद दोनों बेहतर हुए हैं। यह विधि सचमुच ही अनूठी है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 12 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 5 बीघा

फसलें –
गोभी, लैट्यूस, ब्रोकली, मटर, आलू, गाजर, टमाटर, राजमाश

रसायनिक खेती – व्ययः 17,000, आयः 3,50,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 1,000, आयः 4,00,000

सेवानिवृत सेना अफसर ने पहले परखा अब गांव को रसायनमुक्त करने का उठाया बीड़ा

चेतन दोरजे - मो. 94181-83757

आर्मी में बतौर कंमाडर सेवाऐं देने के बाद रिटायर हुए लाहौल के क्योर गांव के चेतन दोरजे ने अब अपने गांव को रसायनमुक्त करने का बीड़ा उठाया है। 76 वर्षीय चेतन दोरजे पिछले दो सालों से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि से खेती कर रहे हैं। इसके लिए उन्होंने पालमपुर में पदम्श्री सुभाष पालेकर का छह दिन का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। चेतन दोरजे बताते हैं कि लाहौल क्षेत्र में खेती रसायनों का प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है जिससे किसानों की लागत में बढ़ोतरी हो रही है और मुनाफा कम होता जा रहा है। इसलिए कई किसान अब खेती से पलायन भी करने लगे हैं। किसानों को पलायन से बचाने और स्वस्थ भोज्य पदार्थ पैदा करने के लिए प्राकृतिक खेती आज समय की मांग बन गई है। उन्होंने बताया कि मैंने पहले इस खेती विधि का प्रशिक्षण लेने के बाद इसे खुद अपने खेतों में परखा। मुझे जो परिणाम मिले हैं उससे मैं बहुत अधिक खुश हूं। इसलिए अब मैं अपने गांव के अन्य किसानों को भी इस खेती विधि के बारे में जागरूक कर रहा हूं ताकि किसानों की कृषि लागत में कमी आए और उनके मुनाफे में बढ़ोतरी हो।

चेतन दोरजे ने बताया कि उन्होंने अपने खेतों में लगाई आलू, मटर, गोभी, प्याज, गाजर और जौ की फसलों के ट्रायल को जब गांववालों को दिखाया तो वे भी प्रभावित हुए। गांववालों ने भी इस प्रत्यक्ष प्रमाण को देखकर प्राकृतिक खेती को करने का मन बना लिया है। इसलिए वे अब अपने गांववालों को प्राकृतिक खेती से जुड़े आदानों के निर्माण और इस खेती के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में बता रहे हैं।

चेतन कहते हैं कि कोरोना महामारी से लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है। लोग जान गए हैं कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए पोषणयुक्त भोजन का सेवन जरूरी है। प्राकृतिक खेती से उगाई फसलें चूंकि रसायनमुक्त और बेहतर गुणवत्ता की हैं तो उपभोक्ता भी इसे तरजीह दे रहे हैं। इस साल मेरे उत्पाद को पिछले वर्षो के मुकाबले ज्यादा दाम मिला है। अब मैं साथी किसानों को इस विधि से खेती करने के लिए प्रेरित कर रहा हूं। व्यक्तिगत तौर पर मैं अगले साल तक 10 बीघा क्षेत्र में प्राकृतिक खेती से फल, सब्जियां एवं खाद्यान्न उगाने की योजना बना रहा हूं।

अच्छा स्वास्थ्य सुखी जीवन की पहली शर्त है और इसके लिए पोषणयुक्त भोज्य पदार्थों की आवश्यकता है। आमदनी, सेहत एवं प्रतिष्ठा यह मुझे प्राकृतिक खेती की ही देन है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 25 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 5 बीघा

फसलें एवं फल –
गोभी, लैट्यूस, ब्रोकली, मटर, आलू, प्याज, गाजर, राजमाश, सेब, फूल, करौंदा

रसायनिक खेती – व्ययः 10,000, आयः 5,50,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 1,000, आयः 6,00,000

आलोचक भी बने प्राकृतिक खेती के प्रशंसक

अशोक कुमार - मो. 94187-76880

हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक खेती की शुरूआत वर्ष 2018 में हुई। शुरूआत में जब किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया तो उन्हें परिवार और साथी किसानों की आलोचना झेलनी पड़ी। लेकिन इस विधि से परिणाम इतने बेहतर मिले कि जो लोग प्राकृतिक खेती की आलोचना कर रहे थे, वही अब प्राकृतिक खेती की विधि सीखने को आतुर हैं। ऐसा ही एक उदाहरण लाहौल-स्पीति जिले के दारचा दांगमा गांव का है। केलांग विकास खंड के तहत आने वाले इस गांव के किसान अशोक कुमार ने जब प्राकृतिक खेती विधि को अपनाया तो पूरे गांव में उनकी आलोचना होने लगी। गांव के लोगों ने उन्हें हतोत्साहित किया, लेकिन अशोक कुमार ने गांव वालों की बातों को नजरअंदाज किया और प्राकृतिक खेती का दामन थामे रखा। जब उनके खेतों में प्राकृतिक खेती के परिणाम दिखने लगे, तो प्राकृतिक खेती के आलोचक भी प्रशंसक बन गए।

अशोक ने बताया कि वर्ष 2019 में पंचायत स्तर पर प्रशिक्षण लेने के बाद वह प्राकृतिक खेती की ओर आए। शिविर में कृषि विभाग के बीटीएम और एटीएम अधिकारियों ने विभिन्न आदानों के निर्माण के साथ उसके प्रयोग एवं छिड़काव की आवृत्ति के बारे में भी जानकारी दी। 2 दिन के इस प्रशिक्षण के बाद अशोक घर की देसी गाय के गोबर और मूत्र से प्राकृतिक आदान बनाकर खेतों में प्रयोग करने लगे।

प्राकृतिक खेती के परिणामों के बारे में अशोक ने बताया कि एक बोरी बीज से उन्होंने 12 बोरी आलू का उत्पादन किया है जो रसायनिक के दौरान 8 बोरी तक ही रहता था। अपनी जमीन में इस साल उन्होंने 350 बोरी आलू की पैदावार ली है। उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ आलू के आकार में भी उन्होंने वृद्धि प्रत्यक्ष तौर पर देखी है। प्राकृतिक खेती में वह आलू के अलावा मटर और फूलगोभी उगा रहे हैं। शत्रु कीटों को फसल से हटाने के लिए वह खेतों में फूल उगा रहे हैं जिससे मुख्य फसल की सुरक्षा हो रही है।

अशोक ने बताया कि प्राकृतिक खेती के परिणामों से गांव वाले हैरत में हैं। वे मुझसे यह विधि सीखने

जीवामृत के प्रयोग से आलू की बंपर फसल मिली है। अन्य फसलों पर भी प्राकृतिक खेती आदानों का प्रयोग कारगर सिद्ध हुआ है। अब आस–पास के किसानों से भी कहता हूं कि आओ और मेरी रसायनमुक्त फसलों को देखो।

का आग्रह करते हैं और मेरे खेतों में लगी विभिन्न फसलों पर प्राकृतिक खेती के नतीजे स्वयं भी देखते हैं। खेती की यह तकनीक सरल, कम खर्चीली और हमारे वातावरण के लिए लाभदायक है। इस खेती को अपनाकर मैं बहुत खुश हूँ और आने वाले समय में अपनी पूरी जमीन पर इसी विधि से खेती करूंगा।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 7 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 3.5 बीघा

फसलें –
फूलगोभी, मटर, आलू, जौ, फूल

रसायनिक खेती – व्ययः 10,000, आयः 1,10,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 1,400, आयः 1,50,000

दुनिया के सबसे ऊंचे गावों में भी प्राकृतिक खेती - कलजंग बने सारथी

कलजंग लादे - मो. 94597-58656

समुद्रतल से 4,300 मीटर की उंचाई पर बसे चिच्चम गांव में रहन–सहन बेहद चुनौतिपूर्ण है। ऐसे में अगर इस दुर्गम क्षेत्र में कोई नौजवान आजीविका के लिए कृषि को चुनता है तो यह अपने आप में जोखिम भरा काम है। काजा विकास खंड के इस गांव में खेती के लिए पानी की उपलब्धता भी कम है ऐसे में यहां खेती करना और भी चुनौतिपूर्ण बन जाता है। लेकिन इन सब चुनौतियों से पार पाते हुए युवा किसान कलजंग लादे ने अपनी 15 बीघा भूमि में बिना किसी प्रकार के रसायन के प्रयोग के प्राकृतिक खेती शुरू कर नई पहल की है।

कलजंग लादे बताते हैं कि हम साल की एक ही फसल लेते हैं और पिछले कुछ सालों से यहां पानी की कमी हो रही है। इसलिए मैंने कम पानी में अच्छी खेती के लिए सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती तकनीक को अपनाया है ताकि फसल को किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचे। कलजंग ने बताया कि उन्होंने अपने खेतों में जौ, मटर, काला मटर, मूली और गोभी की फसलें प्राकृतिक विधि से लगाई हैं। पहले ही साल में उन्हें अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं।

उन्होंने बताया कि इस खेती विधि को अपनाने से मेरी उपज में बढ़ोतरी हुई साथ में सब्जियों की गुणवत्ता भी बहुत अच्छी हो गई है। पहले मैं जिस खेत में मटर लगाता था वहां पर मैंने इस खेती विधि को अपनाया तो मुझे पहले से 10 बोरी अधिक मटर की पैदावार मिली। इस साल मैंने 1.2 टन मटर, 1 क्विंटल मूली, आधा क्विंटल गोभी और 40 वर्ग मीटर के पॉलीहाउस से 2 क्विंटल टमाटर की फसल ली है जिसे देखकर गांव के अन्य किसान भी आश्चर्यचकित हैं।

कलजंग ने कहा कि पहले वे अपने खेतों में रसायनिक खादों और कीटनाशकों का प्रयोग करते थे और इसमें हर साल 18 हजार रूपये का खर्चा आ रहा था। लेकिन प्राकृतिक खेती विधि को अपनाने के बाद अब खर्चा बेहद कम हो गया है। मेरे खेतों में फसलों को देखकर अब गांववाले भी इस खेती विधि के प्रति आकर्षित हो रहे हैं और मैंने अपने गांव के 20 किसानों को इस खेती विधि के बारे में प्रशिक्षण दिया है।

प्राकृतिक खेती ने रसायनों के दुष्चक्र से निकाला है। मैंने तो निर्णय लिया है कि अब इसी विधि से ही खेती करूंगा। मेरे विचार में किसान को सशक्त करने तथा उसकी आमदनी बढ़ाने का सबसे बेहतर विकल्प प्राकृतिक खेती ही है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 46 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 15 बीघा

फसलें –
आलू, मटर, जौ, काला मटर, गोभी, मूली, टमाटर

रसायनिक खेती – व्ययः 18,000, **आयः** 3,50,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 10,000, **आयः** 4,00,000

पारंपरिक फसलों पर ही नहीं औषधीय पौधों पर भी असरदार हुई प्राकृतिक खेती

तेनजिन नोरबू- मो. 94184-11722

जड़ी–बूटियों और विविध वनस्पति से समृद्ध हिमाचल प्रदेश में सैंकड़ों औषधीय पौधों की खेती की जाती है। लाहौल–स्पीति जिला में लंबे समय से औषधीय पौधों की खेती की जा रही है। लाहौल के क्वारिंग गांव के तेनजिन नोरबू ने सब्जियों के साथ अब कुठ और मनु जैसे औषधीय पौधों की खेती शुरू की है। तेनजिन ने पारंपरिक फसलों में अच्छे नतीजे मिलने के बाद औषधीय पौधों की खेती में इस विधि से सफलता हासिल की है। तेनजिन ने प्राकृतिक खेती की शुरूआत 2018 में पद्मश्री सुभाष पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण लेने के बाद की है। उन्होंने बताया कि जब वह पालमपुर में आयोजित शिविर में हिस्सा लेने के लिए जाने वाले थे तो मौसम अचानक खराब हो गया और घरवाले उन्हें शिविर में जाने के लिए मना कर रहे थे। मगर प्रशिक्षण लेने का दृढ़ निश्चय कर चुके तेनजिन ने परिवार वालों की बात दरकिनार कर पालमपुर का रूख किया।

प्राकृतिक खेती का प्रत्यक्ष प्रमाण देखने के लिए तेनजिन ने प्रशिक्षण के बाद एक खेत में बीज संस्कार करने के उपरांत तो दूसरे खेत में पारंपरिक तरीके से आलू बीजा और खेत में नियमित तौर पर जीवामृत और घनजीवामृत का छिड़काव किया। आलू निकालने के समय उन्होंने देखा कि प्राकृतिक खेती वाले खेत में दूसरे खेत की तुलना में बड़े आकार का आलू हुआ और पैदावार भी अधिक रही। इसके बाद उन्होंने बाकी खेतों में दूसरी फसलों पर भी प्राकृतिक खेती तकनीक का प्रयोग शुरू कर दिया।

इस साल तेनजिन ने आलू, मटर और गोभी के साथ औषधीय पौधों की खेती प्राकृतिक तरीके से की है। प्राकृतिक खेती आदानों का नियमित अंतराल पर प्रयोग करने से रोगमुक्त फसलें मिली हैं। इस साल पहली बार उन्होंने मटर के 3 तुड़ान लिए हैं। आलू की पैदावार भी बढ़ी है और 250 कट्टा आलू का उत्पादन हुआ है। तेनजिन ने बताया कि हर साल गोभी की फसल में टेपवर्म (फीताकृमि) की समस्या रहती थी लेकिन फफूंदनाशी खट्टी लस्सी के इस्तेमाल से इस कीड़े का प्रकोप कम हुआ है। प्राकृतिक खेती से

इस खेती विधि की सफलता से मेरा आत्मविश्वास इतना बढ़ गया है कि चाहे पारम्परिक फसलें हों या नकदी फसलें सभी में निश्चित सफलता मिल रही है और उत्पादन बढ़ रहा है।

उनकी आय भी बढ़ी है जहां वह पहले 1 लाख 40 हजार की आय कमा रहे थे अब वह बढ़कर 1 लाख 50 हजार हो गई है और लागत भी पहले के मुकाबले कम है।

तेनजिन अपने आस – पास के गांवों में विभागीय अधिकारियों के साथ प्राकृतिक खेती पर आयोजित प्रशिक्षण शिविर में किसानों के साथ अपने अनुभव साझा करते हैं और उनसे यह खेती अपनाने का आग्रह करते हैं। अब तक वह 150 से ज्यादा लोगों को इस खेती के बारे में जागरूक कर चुके हैं। उनकी आगामी योजना गांव को रसायनमुक्त करने के साथ इस खेती के तहत दायरा बढ़ाना है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 15 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 3.5 बीघा

फसलें एवं फल –
आलू, मटर, बंदगोभी, फूलगोभी, कुठ, मनु

रसायनिक खेती – व्ययः 14,000, आयः 1,40,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 1,500, आयः 1,50,000

पोषणयुक्त उगाने की चली बयार, अंकित ने गांव वालों को बनाया बदलाव में साथी

अंकित डोलमा - मो. 94599-80775

भारत के शीत मरूस्थल के नाम से विख्यात लाहौल–स्पीति में प्राकृतिक खेती विधि से पोषणयुक्त अनाज और सब्जियां उगाने की बयार चली है। क्षेत्र के किसान रसायनों की तिलांजलि देकर सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से कई फसलें उगा रहे हैं। यहां के किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाकर मौजूदा खेती व्यवस्था में बदलाव लाया और अब इसके प्रसार को अभियान की तरह आगे बढ़ा रहे हैं। बदलाव की इस प्रक्रिया में काजा विकास खंड के क्युलिंग गांव की अंकित डोलमा ने गांव वालों को अपना साथी बनाया है। इस महिला किसान ने पहले खुद प्राकृतिक खेती पद्धति को अपनाया और अच्छे परिणाम देखकर अब ये अपने गांव के किसानों को इस विधि से खेती करना सिखा रही हैं।

अंकित डोलमा ने प्राकृतिक खेती की शुरूआत 2019 से की है। उन्होंने 2019 में पंचायत स्तर पर आयोजित 2 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में हिस्सा लिया और कृषि विभाग के अधिकारियों से इस खेती के गुर सीखे। शिविर से घर पहुंचने के बाद उन्होंने घर में रखी गाय के गोबर–गोमूत्र से जीवामृत और घनजीवामृत बनाया और घरेलू जरूरत के लिए उगाई सब्जी पर इनका प्रयोग किया। इससे उन्हें अच्छे परिणाम मिले और उन्होंने पारंपरिक मटर, आलू पर भी प्राकृतिक खेती के विभिन्न आदानों के इस्तेमाल से अच्छी उपज ली।

प्राकृतिक खेती के बारे में और जानने एवं उसके प्रत्यक्ष प्रभाव देखने के लिए वह ब्लॉक की तरफ से भ्रमण के लिए ताबो स्थित कृषि विज्ञान केंद्र भी गईं। वहां पर प्राकृतिक खेती से उगी अलग–अलग फसलें देखने और कृषि वैज्ञानिकों से हुई बातचीत ने उनकी इस खेती के प्रति रूचि को और बढ़ा दिया।

अंकित ने बताया कि पहले वह प्राकृतिक खेती के सह–फसल और आच्छादन करने के सिद्धांत का पालन नहीं कर रही थीं। मगर ताबो से लौटने के बाद उन्होंने अपने खेतों में मटर के साथ सरसों और पालक लगाया और आच्छादन भी किया। जब फसल बेहतर मिली तो गांव वाले भी इस खेती के बारे में पूछने लगे। मैंने उन्हें इस विधि के बारे में बताया और खुद आदान बनाकर दिये। आज गांव के तंडुप छेरिंग, चेंडुप दोरजे, सोहम सिंह और टशी खुद विभिन्न आदान बनाकर खेतों में छिड़काव कर रहे हैं।

प्राकृतिक खेती से मुनाफे के साथ–साथ समाज में मान भी बढ़ा है। मुझे लगता है कि किसानों का उत्साह और हमारे युवा अधिकारियों का कठिन परिश्रम निश्चय ही इस विधि का प्रसार कर शीघ्र ही किसानी की तस्वीर बदल देगा।

अंकित ने इस साल 2 बीघा क्षेत्र से 2 टन मटर की उपज ली है। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती से मटर में आने वाले काले दाग की समस्या से निजात मिली है। सप्तधान्यांकुर अर्क के प्रयोग से मटर के दाने बेहतर हुए वहीं जीवामृत के नियमित अंतराल पर प्रयोग से मटर की फलियां मोटी और वजनदार हुई हैं। अपनी कृषि उपज को अंकित ने स्थानीय मंडी में अच्छे दाम पर बेचा है। प्राकृतिक खेती के नतीजों से उत्साहित अंकित अब फसल विविधिकरण और इस पद्धति के अंतर्गत भूमि क्षेत्र बढ़ाने की योजना पर काम कर रही हैं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 7 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 2 बीघा

फसलें –
आलू, मटर, मूली, शलगम, पालक, सरसों

रसायनिक खेती – व्ययः 15,000, आयः 70,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 10,000, आयः 85,000

शीत मरुस्थल में प्राकृतिक सेब-सफलता की नई इबारत

विजय - मो. 78765-35813

सेब-बागवानी में अब हिमाचल प्रदेश के अन्य जिलों के साथ लाहौल-स्पीति जिला भी हर साल करोड़ों का सेब बाजार में उतार रहा है। यहां के बागवान प्राकृतिक विधि से सेब बागवानी कर मुनाफा कमा रहे हैं। स्पीति क्षेत्र के हुरलिंग गांव में सेब बागवान विजय कुमार ने रसायनों को त्याग प्राकृतिक विधि से सेब बागवानी कर गांव के एक दर्जन किसानों को इस विधि की ओर मोड़ा है।

प्रगतिशील बागवान विजय कुमार बताते हैं कि उनके गांव में 1980 के दशक में सेब बागवानी आई थी। कई सालों तक बागवानों ने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया लेकिन अब बागवान इसके प्रति संजीदा हो गए हैं। इसलिए मैंने सेब बागवानी को और बेहतर करने के लिए पहले सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का नौणी विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण लिया और इसके बाद अपने 5 बीघा बागीचे में प्राकृतिक विधि से सेब बागवानी शुरू कर दी। उन्होंने बताया कि इस विधि को अपनाने से मेरी पैदावार में तो बढ़ोतरी हुई ही साथ ही पौधों स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा हो गया है। मेरे बागीचे में उगे हुए सेब को देखने के लिए अन्य बागवान भी बागीचे में पहुंच रहे हैं और इस खेती विधि के बारे में जानकारी ले रहे हैं।

विजय ने बताया कि वे अभी तक गांव के एक दर्जन किसान-बागवानों को जागरूक कर इस खेती विधि से जोड़ चुके हैं। उन्होंने बताया कि अभी तक तो मैं इसे प्रयोग के तौर पर कर रहा था लेकिन अगले साल से अपनी पूरी 25 बीघा भूमि पर प्राकृतिक खेती करूंगा। विजय का कहना है कि इस खेती विधि में बाजार से कुछ भी लाने की जरूरत नहीं है। किसान अपने आस-पास मौजूद वनस्पतियों और संसाधनों से खेती में प्रयोग होने वाले आदान तैयार कर सकता है जिससे उसकी कृषि लागत में कमी होगी। वह कहते हैं कि इस खेती विधि को यदि पूरी तरह अपनाया जाए तो किसी प्रकार का नुकसान भी नहीं उठाना पड़ता है।

इस खेती विधि के तहत उगाए गए सेब और सब्जियों के उत्पादन को देखकर गांववाले हैरान हैं। वे भी इस विधि को अपनाने के लिए प्रशिक्षण ले रहे हैं। अब तो हम भी दावे के साथ लागों को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 25 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 5 बीघा

फसलें एवं फल –
गोभी, मटर, मटर, आलू, राजमाश, सेब

रसायनिक खेती – व्ययः 15,000, आयः 4,00,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 2,000, आयः 4,50,000

प्राकृतिक खेती से फल-सब्जियां ही नहीं फूल भी महके

बलवीर सिंह - मो. 94182-61179

लाहौल के किसानों की पूरे साल की रोजी-रोटी केवल एक फसल सीजन पर टिकी होती है। इसलिए साल की एक ही फसल लेने वाले यहां के किसान खेती-बाड़ी में नए प्रयोगों को अपनाने के बजाए पुराने ढर्रे से चल रही खेती पद्धति को ही अपनाते हैं। लेकिन बलवीर सिंह की तरह भी किसान हैं जो हमेशा कुछ नया करने की चाह रखते हैं और लीक से हटकर काम करके औरों के लिए प्रेरणाश्रोत का काम करते हैं। लाहौल के मडग्रां गांव के बलवीर सिंह ने न सिर्फ सब्जियों और अनाजों में बल्कि फूलों की खेती में भी सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का प्रयोग किया। इसमें सफल परिणाम पाकर उन्होंने क्षेत्र के अन्य कई किसानों को कम लागत वाली प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए प्रेरित करने का काम किया है।

बलवीर का कहना है कि जब उन्होंने इस खेती विधि का प्रशिक्षण लिया था, तो उन्हें भी अन्य किसानों की तहत ही लगा कि खट्टी लस्सी और गाय के गोबर से ब्लाइट, फंगस और अन्य बीमारियां कैसे नियंत्रित होंगी? लेकिन जब उन्होंने घर में बने संसाधनों खट्टी लस्सी और जीवामृत से फसलों में आने वाली बीमारियों को नियंत्रित होते देखा तो वे हैरान रह गए और अगले सीजन से उन्होंने अपनी 3 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती को अपना लिया।

बलवीर गोभी, मटर, गाजर, जौ और आलू के साथ फूलों की खेती भी करते हैं। प्राकृतिक खेती में उन्होंने सह-फसल के तौर पर राजमाह और धनिया उगाया है। लिलियम फूलों की खेती में जीवामृत के प्रयोग से उन्हें अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं।

बलवीर का कहना है कि इस खेती विधि से उन्हें रसायनमुक्त खाद्यान्न तो मिल रहे हैं साथ ही रसायनिक कीटनाशकों और खादों को देती बार शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से भी छुटकारा मिला है। उन्होंने बताया कि उनके खेतों में बेहतर फसल को देखकर गांव के अन्य किसान भी इस खेती विधि को अपनाने के लिए तैयार हो गए हैं और जल्द ही पूरा गांव प्राकृतिक खेती को पूरी तरह अपनाने जा रहा है।

मैंने सब्जियों के साथ फूलों की खेती में भी प्राकृतिक विधि को आजमाया है। कोई भी फसल ऐसी नहीं है जिसमें मुझे बेहतरीन परिणाम न मिले हों।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 12.5 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 3 बीघा

फसलें –
गोभी, मटर, आलू, राजमाह, लिलियम, गाजर, जौ, धनिया, कुठ, मनू

रसायनिक खेती – व्ययः 30,000, आयः 2,00,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 2,000, आयः 3,00,000

बाजार व्यवस्था बनाकर पाई प्राकृतिक खेती में सफलता

येशे डोलमा - मो. 70188-20986

हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिले लाहौल–स्पीति की कठिन भौगोलिक और मौसमी परिस्थितियां आम जनजीवन के लिए एक बड़ी चुनौती हैं। देश–दुनिया से 6 महीने कट जाने वाले इस जिले में खेती करना और ज्यादा चुनौतिपूर्ण है। शुष्क–शीतोष्ण इस इलाके में किसान बामुश्किल एक फसल ले पाते हैं। ऐसे में किसानी से आत्मनिर्भरता की ओर जाना असंभव सा लगता है। लेकिन इस धारणा को यहां की एक महिला किसान ने बदल डाला है। काजा विकासखंड की महिला किसान येशे डोलमा ने खेती से आत्मनिर्भरता की राह पकड़ क्षेत्र के किसानों के लिए मिसाल पेश की है।

येशे ने 'प्राकृतिक खुशहाल किसान योजना' के तहत सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से **कोल्ड डेजर्ट ऑफ इंडिया** में हरियाली लाई है। इस खेती पद्धति को अपनाकर येशे डोलमा ने महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता का उदाहरण पेश किया है। येशे ने बताया कि खेती लागत कम करने और स्वस्थ व पोषणयुक्त भोजन उगाने के लिए उन्होंने प्राकृतिक खेती को चुना और इसके परिणामों से वे खुश हैं। आज येशे डोलमा प्राकृतिक खेती से इंग्लिश वेजिटेबल्स सहित कुल 9 तरह की फसलों का उत्पादन कर रही हैं।

येशे ने बताया कि वर्ष 2019 में गांव में कृषि विभाग ने प्राकृतिक खेती पर एक शिविर का आयोजन किया था। शिविर में कृषि अधिकारियों ने प्राकृतिक खेती के बारे में बताया और इस खेती में प्रयोग होने वाले आदानों का व्यवहारिक ज्ञान भी दिया। इसके बाद मैंने उन आदानों को घर पर तैयार करना शुरू किया और खेतों में प्रयोग करने लगी। प्राकृतिक खेती के आदानों को प्रयोग करने से मटर में लगने वाले रोग पाऊडरी मिल्डियू और अन्य कीटों पर नियंत्रण हो गया और उत्पादन भी पहले की तुलना में अच्छा होने लगा। इसके बाद दिसंबर 2019 में वे एक्सपोजर विजिट के लिए कुरूक्षेत्र स्थित गुरूकुल गईं। एक्सपोजर विजिट के दौरान उन्हें पता चला कि प्राकृतिक खेती से साल भर अलग–अलग फसलें उगाकर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं। घर लौटकर उन्होंने नर्सरी में गोभी की पनीरी लगाई और पौध खेत में रोप कर पहली बार

इस खेती विधि से जुड़ाव के कारण हम तो कोविड–19 का संकट भी भूल गए। अब तो स्थिति यह है कि लोग प्राकृतिक उत्पादों का इंतजार करते हैं और मंडी में पहुंचते ही ये हाथों–हाथ बिक जाते हैं। प्राकृतिक खेती से अब हमारी सेहत और बाजार की चिंता खत्म हो रही है।

सफलतापूर्वक गोभी की फसल ली।

कोरोना महामारी के दौरान मौजूदा बाजार व्यवस्था चरमरा गई और किसानों को अपनी फसल बेचने के लिए दिक्कतें पेश आने लगीं। ऐसे में स्थानीय प्रशासन की मदद से प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों ने **अपनी मंडी** नाम से एक स्थानीय मंडी खोली। सप्ताह के 3 दिन चलने वाली इस मंडी में येशे ने कोरोना महामारी के दौरान 40 हजार रूपए की सब्जियां बेची हैं। येशे 3 बीघा क्षेत्र से इस साल ब्रोक्ली, आलू, मटर, फूल व पत्ता गोभी से 2 लाख की आय कमा चुकी हैं। कोरोना काल से उनकी बाजार के प्रति समझ बढ़ी है और अब वे बाजार की खपत के हिसाब से अलग–अलग तरह की फसलें लगा रही है ताकि स्थानीय तौर पर ही इनकी खपत हो सके।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 25 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 2.5 बीघा

फसलें–
ब्रोक्ली, फूल गोभी, पत्ता गोभी, शलगम, मटर, आलू, सरसों, मूली, लैट्यूस

रसायनिक खेती–व्ययः 50,000, **आयः** 1,40,000

प्राकृतिक खेती–व्ययः 30,000, **आयः** 2,00,000

प्राकृतिक खेती ने दिला दी रसायनों को तिलांजली

अशोक कुमार - मो. 94182-80651

प्रदेश में चल रहे प्राकृतिक खेती अभियान से जहां किसानी की तस्वीर बदल रही है वहीं इस विधि से किसान प्रकृति से जुड़ाव भी महसूस कर रहे हैं। यह कहना है लाहौल-स्पीति जिला के किसान अशोक कुमार का। केलांग विकास खंड के पस्पराग गांव के निवासी अशोक कुमार ने 2019 से इस खेती की शुरूआत की है। 2 साल की अवधि में उन्होंने प्राकृतिक खेती विधि से एक साथ 7 फसलें ली हैं।

अशोक पहले रसायनिक खेती कर रहे थे और मटर, आलू के साथ गोभी उगाते थे। एक खेत से वह एक ही फसल ले रहे थे लेकिन खेती की बढ़ती लागत और रसायनों पर निर्भरता से उनका मन उबने लगा था। 2019 में पालमपुर में आयोजित पालेकर जी के 6 दिवसीय प्रशिक्षण ने इनकी खेती के प्रति दुबारा आस जगाई और प्रशिक्षण हासिल करने के बाद अशोक पूरी लगन से प्राकृतिक आदान बनाकर खेतों में प्रयोग करने लगे।

अशोक ने क्षेत्र की प्रचलित मटर की फसल पर जीवामृत, घनजीवामृत, सप्तधान्यांकुर अर्क और खट्टी लस्सी का छिड़काव किया। इसके नतीजे अच्छे रहे और मटर की पैदावार पहले के मुकाबले बढ़ी। इसके बाद अशोक ने प्राकृतिक खेती से अन्य फसलें उगाना भी शुरू किया। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती के सह-फसल और आच्छादन सिद्धांत का पालन करने से उन्होंने कम पानी में खेतों से राजमाह, गेंदा, चुकंदर की फसल भी ली है।

अशोक कुमार पद्मश्री पालेकर जी द्वारा बताए अनुसार प्राकृतिक खेती से उगाए आलू, मटर और बाकी फसलों के बीज संरक्षण का काम भी कर रहे हैं। वह कहते हैं कि नए किसानों को प्रशिक्षण शिविर के दौरान संरक्षित बीज देना उन्हें इस खेती के प्रति प्रोत्साहित करेगा। अशोक अब तक अपने साथ दो दर्जन से ज्यादा किसानों को जोड़ चुके हैं। वह समय-समय पर इन किसानों के खेतों में जाकर उनसे बातचीत करते हैं और उन्हें आ रही समस्याओं का हल सुझाते हैं। प्राकृतिक खेती के प्रसार के साथ आगामी वर्षो में वह व्यक्तिगत तौर पर इंग्लिश वेजिटेबल की खेती इस विधि से करने की योजना बना रहे हैं।

अब तो मेरी अलग ही पहचान बन गई है। आस–पास के किसान मुझे फोन करके प्राकृतिक खेती को लेकर सवाल करते हैं। फिर अपना सन्देह दूर करके इसे अपनाने का और मुझसे सहयोग देने का वचन लेते हैं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 8 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 6 बीघा

फसलें –
आलू, गोभी, मटर, गाजर, चुकंदर, राजमाह, गेंदा

रसायनिक खेती – व्ययः 12,000, आयः 80,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 1,000, आयः 1,30,000

छेरिंग युरजोम - मो. 94599-80775

छटुप दोरजे- मो. 85191-01703

प्राकृतिक खेती से वांछित सफलता हासिल कर दो किसानों ने छेड़ी गांव को रसायनमुक्त करने की मुहिम

जनजातीय जिले लाहौल – स्पीति के रांगरिक गांव में छटुप दोरजे और छेरिंग युरजोम ने गांव को पूरी तरह प्राकृतिक खेती विधि में परिवर्तित करने की मुहिम छेड़ी है। दुर्गम परिस्थितियों वाले इस जिले के इन दोनों अनुभवी किसानों ने पहले खुद प्राकृतिक खेती विधि से फसलें उगाकर इसके परिणामों को देखा और अब ये बाकि किसानों को इस खेती विधि से जोड़ रहे हैं।

रांगरिक के छटुप दोरजे ने बताया कि कृषि विभाग से सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने 2019 में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया और पारंपरिक जौ तथा मटर की फसल पर आदानों के प्रयोग से शुरूआत की। पहले साल ही उन्हें अच्छी उपज तथा मिट्टी की सेहत में सुधार देखने को मिला। पहले खेत की मिट्टी सख्त रहती थी लेकिन जीवामृत के नियमित अंतराल पर प्रयोग से मिट्टी मुलायम और भुरभुरी हो गई। इस साल उन्होंने प्राकृतिक खेती का विस्तार करते हुए 2 बीघा जमीन के साथ 35 वर्ग मीटर के पॉलीहाउस में भी इस विधि को अपनाया और गोभी, सरसों, पालक एवं टमाटर के साथ गेंदे की बिजाई की। उन्हें इस साल सबसे आश्चर्यजनक नतीजे गोभी का फसल पर मिले हैं। प्राकृतिक खेती से गोभी पर शत्रु कीट नहीं आए और आच्छादन से खेत में गोभी की फसल अक्तूबर महीने तक सुरक्षित रही जो पहले सितम्बर में ही खत्म हो जाती थी। विभिन्न फसलें बेचकर छटुप ने इस साल 1 लाख 10 हजार रूपए की आय अर्जित की है। इससे आस – पास के किसान भी प्राकृतिक खेती के प्रति आकर्षित हुए हैं।

छटुप दोरजे की तरह ही महिला किसान छेरिंग युरजोम प्राकृतिक खेती के प्रसार में अहम भूमिका निभा रही हैं। युरजोम ने 2019 में खण्ड स्तर के अधिकारियों से प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया और आलू

मैंने कृषि विभाग में सेवा के दौरान विभिन्न कृषि योजनाओं को देखा है लेकिन इस योजना में अधिकारियों और किसानों का जुड़ाव अप्रत्याशित है। इसी वजह से यह खेती विधि किसानों में ख्याति पा रही है। – छटुप दोरजे

के खेत में खुद के बनाए आदानों का प्रयोग करने लगीं। जौ, आलू और मटर के साथ उन्होंने गोभी पर प्राकृतिक विधि को अपनाया। 2020 में उन्होंने खेत को बिजाई के लिए तैयार करते समय जीवामृत और घनजीवामृत का इस्तेमाल किया और बीजसंस्कार करके आलू, मटर, टमाटर, गोभी और जौ खेतों में बोया। सभी आदानों के उचित मात्रा और तय समयावधि में छिड़काव करने से इस साल उन्होंने अपने खेतों से बंपर फसल ली है। युरजोम ने बताया कि इस साल उन्होंने 2 बीघा क्षेत्र से 5 बीघा क्षेत्र के बराबर आलू का उत्पादन लिया है। इसके अलावा उन्होंने 3 क्विंटल मटर, 2.5 क्विंटल फूलगोभी और 3 क्विंटल मूली की बीमारी रहित उपज ली है। प्राकृतिक खेती के प्रत्यक्ष नतीजों को देखकर साथी किसान भी इस खेती से जुड़ रहे हैं। युरजोम ने '**अपनी मंडी**' में सब्जियां बेचकर 1 लाख 70 हजार रूपए की आय कमाई है। वह साथी किसानों को गोबर – गोमूत्र और बाकि आदान बनाकर दे रही हैं ताकि वे जल्द इस विधि को अपनाएं।

कम पानी की आवश्यकता ही है इस खेती की विशेषता

कलजंग आंग्चुक - मो. 76674-23649

हिमाचल प्रदेश के दुर्गम जिले लाहौल-स्पीति के कलजंग आंग्चुक ने प्राकृतिक खेती से अपनी खेती की तस्वीर बदल डाली है। 52 साल के कलजंग का खेती के प्रति बचपन से ही लगाव रहा है। जिज्ञासु और जुनूनी इस किसान ने पालेकर जी के खेती सिद्धांत का कड़ाई से पालन कर अच्छी पैदावार ली है और अब क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए प्रेरणाश्रोत बने हैं।

कलजंग ने बताया कि 2018 में उन्होंने पहली बार प्राकृतिक खेती का नाम सुना। इसके बाद उन्होंने ब्लॉक स्तर के अधिकारियों से संपर्क साधा और कुफरी में 6 दिवसीय प्रशिक्षण के लिए नामित हुए। 6 दिन के इस प्रशिक्षण ने कलजंग के मानस पर गहरा प्रभाव डाला और उन्होंने इस विधि से ही खेती करने की ठान ली। पालेकर जी से विधिवत प्रशिक्षण लेने के बाद उन्होंने घर आकर पहाड़ी गाय के गोबर-मूत्र से आदान बनाना शुरू कर प्रयोग किया। अच्छे नताजे मिलने पर वह इस विधि से ही खेती करते रहे। पिछले 3 साल में विभिन्न फसलें लेकर अब वह इस विधि में पूरी तरह पारंगत हो गए हैं।

कलजंग आंग्चुक ने इस साल प्राकृतिक विधि से आलू, मटर, जौ, मूली, गोभी, पालक, टमाटर की फसल ली है। इसके साथ ही वह सेब के 120 पौधों पर भी प्राकृतिक खेती आदानों का प्रयोग कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती से जहां सेब के पौधों की बढ़वार अच्छी हुई है वहीं सब्जियों के स्वाद में स्पष्ट अंतर देखने को मिला है। इस साल कलजंग ने 70 किलो मूली, 3.8 टन मटर और 26 क्विंटल पीले जौ की उपज ली है।

उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती आदानों के प्रयोग से जमीन में पानी धारण करने की शक्ति बढ़ी है। इससे ज्यादा पानी की मांग वाली फसल के लिए पिछले सालों की तुलना में कम सिंचाई की जरूरत पड़ी है। गोभी के फूलों के आस-पास किए गए आच्छादन से नमी बरकरार रही और मौसम की वजह से फसल पर होने वाला प्रतिकूल असर भी कम हुआ है।

पालेकर जी का प्रशिक्षण किसान के मन–मस्तिष्क को बदल कर खेती की दशा और जीवन की दिशा को बदल देता है। उनके प्रशिक्षण ने खेती के प्रति समझ बढ़ाई और आज मैं रसायनमुक्त तरीके से खेती कर सुकून ही महसूस नहीं कर रहा बल्कि उत्पादन–आय भी बढ़ा रहा हूं।

कलजंग पहले अपनी सब्जियां बाहर भेजते थे लेकिन कोरोना महामारी से पूरी बाजार व्यवस्था चरमरा गई। ऐसे में '**अपनी मंडी**' का खुलना राहत की बात रही। कलजंग ने अपनी मंडी में 1 लाख 68 हजार रूपए का मटर, 5 हजार रूपए की गोभी और 21 हजार रूपए की मूली बेचकर 1 लाख 94 हजार रूपए की आय अर्जित की है। वे बेहद खुश हैं और साथी किसानों को भी इस विधि से खेती करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 25 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 10 बीघा

फसलें व फल–
आलू, मटर, जौ, मूली, गोभी, पालक, टमाटर, राजमाह, सेब

रसायनिक खेती–व्ययः 30,000, **आयः** 1,50,000

प्राकृतिक खेती–व्ययः 29,000, **आयः** 1,94,000

प्राकृतिक खेती से शुष्क-शीतोष्ण क्षेत्र में लहराई 9 फसलें

लोबजंग दोरजे - मो. 94189-80871

6 महीने के फसल – सीजन में लाहौल – स्पीति जिला की पिन वैली के किसान एक – दो फसलें ही ले पाते हैं। ज्यादातर किसान तो एक फसलीय खेती प्रणाली ही अपनाते हैं। मगर अब यहां के किसान विविध फसलें उगा रहे हैं। किसानों का फसल विविधिकरण की ओर जाना प्राकृतिक खेती से ही संभव हो पाया है। यह कहना है कुंगरी पंचायत के लोबजंग दोरजे का जो प्राकृतिक खेती से एक फसल सीजन में 9 फसलें उगा रहे हैं।

2019 में प्राकृतिक खेती की ओर आए लोबजंग इससे पहले मटर और जौ जैसी पारंपरिक फसलें ही उगा रहे थे। हालांकि इस दौरान भी वे कृषि रसायनों का प्रयोग कम करते थे लेकिन मौसमी बदलावों से परंपरागत खेती में भी समय के साथ दिक्कतें बढ़ रही थीं। मटर में सिंचाई के लिए पानी की कमी हो रही थी और फलस्वरूप उत्पादन पर विपरीत असर पड़ रहा था। जब कृषि विभाग ने कुंगरी पंचायत में प्राकृतिक खेती पर 2 दिन के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया तो लोबजंग भी इसका हिस्सा बने।

ब्लॉक स्तर के आतमा अधिकारियों से प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लेकर लोबजंग ने इस खेती विधि के तहत जीवामृत बनाकर शिविर के दौरान वितरित गोभी की पनीरी पर छिड़काव से शुरूआत की और धीरे – धीरे अन्य आदान भी बनाने लगे। बुआई के लिए खेत तैयार करते हुए उन्होंने अधिकारियों के बताए अनुसार जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग किया। इसके बाद उन्होंने गोभी के साथ मटर और टमाटर को बीजामृत से संस्कारित करने के बाद इनकी बुआई की। प्राकृतिक खेती के सह – फसल सिद्धांत का पालन करते हुए उन्होंने धनिया भी खेत में लगाया।

नियमित अंतराल पर प्राकृतिक खेती आदानों का प्रयोग करने से उन्हें कुछ प्रत्यक्ष अनुभव हुए। पारंपरिक खेती के दौरान मटर के पत्तों पर आने वाला पीलापन कम हुआ और मटर का पौधा पहले की तुलना में स्वस्थ रहा। चूंकि वह समय – समय पर अधिकारियों के मार्गदर्शन में फसल सुरक्षा के लिए जीवामृत,

कठिन परिस्थितियों और कम पानी की उपलब्धता में भी इस खेती विधि से मैंने एक से अधिक फसलें लगाईं। मुझे आशा से अधिक उत्पादन मिला और खर्चा कम हो गया।

खट्टी लस्सी, अग्निअस्त्र का प्रयोग कर रहे थे इसलिए फूलगोभी की फसल पर कीड़ों का प्रकोप कम रहा एवं घर के लिए बीजे गए टमाटर में भी कोई बीमारी नहीं आई।

लोबजंग ने बताया कि प्राकृतिक खेती विधि से उन्हें इस साल 4 टन मटर, 2 क्विंटल आलू, 2 क्विंटल मूली, 2.5 क्विंटल फूलगोभी और 1.2 क्विंटल पत्ता गोभी की पैदावार मिली है। उन्होंने काजा मंडी में 60 हजार रूपए की सब्जियां बेची हैं और प्राकृतिक खेती में उनकी सालाना आय 3 लाख रूपये हो गई है। मंडी में प्राकृतिक खेती उत्पादों के प्रति लोगों के रूझान से वह काफी प्रभावित हुए हैं और अगले फसल सीजन में बड़े क्षेत्र पर प्राकृतिक खेती करने की योजना बना रहे हैं। वह अपने आस-पास के किसानों को मार्गदर्शन देने के साथ घर की गाय का गोबर और मूत्र देकर उन्हें इस खेती के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 17 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 2 बीघा

फसलें –
आलू, मटर, जौ, फूलगोभी, पत्ता गोभी, ब्रोक्ली, मूली, धनिया, टमाटर

रसायनिक खेती – व्ययः 20,000, आयः 2,70,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 10,000, आयः 3,00,000

अब मात्र 2 नहीं 12 फसलों का बना खेत-खलिहान

राजेश - मो. 94186-12420

हिमाचल का लाहौल – स्पीति जिला वैसे तो आलू और मटर की खेती के लिए मशहूर है, लेकिन अब किसान अन्य फसलों की तरफ भी रुख कर रहे हैं। आलू और मटर के अलावा बाकी फसलों की खेती के लिए यहां के किसानों को प्राकृतिक खेती ने बहुत प्रोत्साहित किया है। केलांग विकास खंड के तहत आने वाले शूलिंग गांव के राजेश सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से 12 फसलें उगा रहे हैं।

राजेश पहले मुख्य तौर पर आलू और मटर की खेती ही कर रहे थे। इन फसलों के अलावा वह बाकी फसलें उगाने का प्रयास भी कर रहे थे लेकिन पुरानी पद्धति से इसमें सफलता नहीं मिल रही थी। प्राकृतिक खेती से उन्होंने बाकी फसलें उगाने में सफलता पाई है और मौजूदा समय में वह 12 फसलें अपने खेत – बागीचे में उगा रहे हैं।

राजेश ने बताया कि शुष्क क्षेत्र होने की वजह से फसलों को आवश्यक पोषक तत्व सही मात्रा में नहीं मिल पा रहे थे। इन पोषक तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए कई सारे रसायनों का इस्तेमाल करना पड़ रहा था। फूलगोभी की फसल में कैल्शियम की कमी होती थी। कई रसायन प्रयोग किए पर उत्पादन अच्छा नहीं हो रहा था। जब उन्होंने गोभी में प्राकृतिक खेती आदानों का प्रयोग किया तो कैल्शियम की कमी खत्म हो गई और फसल भी अच्छी मिली।

सब्जियों और खाद्यान्न के साथ राजेश सेब व प्लम के पौधों पर प्राकृतिक खेती का प्रयोग कर रहे हैं। वह अपने आधा बीघा के बागीचे में सेब के 15, प्लम के 7 पौधों पर प्राकृतिक खेती आदानों का छिड़काव कर रहे हैं। इन आदानों के प्रयोग से पौधों की बढ़वार अच्छी हो रही है। अपने बागीचे में वह फ्रासबीन, पालक, स्ट्राबेरी, प्याज, हरी मिर्च, राजमाश और गेंदा भी उगा रहे हैं।

राजेश ने बताया कि उन्होंने प्राकृतिक खेती की शुरूआत 2019 में आयोजित 2 दिवसीय प्रशिक्षण

पहली बार आलू की फसल पर प्राकृतिक विधि का प्रयोग किया। इतने बेहतर नतीजे मिले कि अब बंजर छोड़े खेतों पर भी खेती शुरू कर दी है। यह विधि गोभी में सूक्ष्म तत्वों की कमी भी पूरा करेगी ऐसा कभी नहीं सोचा था।

शिविर के बाद की है। कृषि अधिकारियों के संपर्क और मार्गदर्शन से उन्होंने आदान बनाकर खेती में प्रयोग किए जिसके उन्हें अच्छे परिणाम मिले। उनका कहना है कि प्राकृतिक खेती से फसलों की रोग प्रतिरोधकता बढ़ी है। रसायनिक खेती में जिन रोगों की रोकथाम नहीं हो पाती थी, वह प्राकृतिक खेती से हो रही है। वह उत्साहित हैं और गांव के अन्य किसानों को भी इस खेती के प्रति प्रोत्साहित कर रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 15 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 3 बीघा

फसलें एवं फल –
आलू, राजमाह, गेंहू, ब्रोक्ली, आइसबर्ग, प्याज, टमाटर, शिमला – मिर्च सेब, प्लम, स्ट्राबेरी, गेंदा

रसायनिक खेती – व्ययः 10,000, **आयः** 1,75,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 1,400, **आयः** 2,45,000

सब तरीके अपनाए पर काम आई केवल प्राकृतिक खेती

राकेश कुमार - मो. 89885-72071

शुष्क-शीतोष्ण लाहौल-स्पीति मौसम के लिहाज से बेहद संवेदनशील जिला है। कड़ाके की ठंड, भीषण बर्फबारी, तापमान में उतार-चढ़ाव और आधे साल के लिए बाकि दुनिया से कट जाना यहां के किसानों के लिए कड़ी चुनौतियां पेश करता है। ऐसी परिस्थितियों में खेती करना कठिन काम है, लेकिन काजा विकास खंड के राकेश कुमार की मुश्किलें प्राकृतिक खेती ने आसान की हैं।

कुंगरी पंचायत के तांग्ती युग्मा गांव से संबंध रखने वाले राकेश जलशक्ति विभाग में कार्यरत हैं और नौकरी के साथ खेती पर भी बराबर ध्यान देते हैं। वह पिछले 1.5 दशक से अपने खेतों में आलू, मटर, गोभी और काला मटर उगा रहे हैं। राकेश 2018 तक पारंपरिक तरीके से खेती कर रहे थे। फसल सुरक्षा के लिए रसायनों के इस्तेमाल के साथ वह मौसम की मार से फसल को बचाने के अलग-अलग नुस्खे अपनाते थे। लेकिन कोई भी तरीका कारगर साबित नहीं हुआ। अंत में उन्होंने 2019 में प्राकृतिक खेती का दामन थामा और इस विधि से फसल पर पड़ने वाली मौसमी मार पर नियंत्रण पाने में कामयाबी हासिल की।

राकेश ने बताया कि प्राकृतिक खेती आदानों के प्रयोग से जमीन में पानी को रोक कर रखने की क्षमता बढ़ी है। मटर, फूलगोभी जैसी नकदी फसलों में लगने वाले रोगों पर भी जीवामृत, अग्निअस्त्र, दशपर्णी अर्क के छिड़काव से नियंत्रण हुआ है।

राकेश कुमार ने 2019 में पंचायत स्तर पर प्रशिक्षण लेने के बाद गोभी, मटर, आलू व धनिये की फसल पर प्राकृतिक विधि का परीक्षण किया। इसके परिणाम इतने अच्छे मिले कि रासायनिक खाद और फंफूदनाशकों की जरूरत ही समाप्त हो गई। पहले वह मटर की फसल में हर साल 4,000 रूपए की रसायनिक खाद और फंफूदनाशकों का प्रयोग कर रहे थे। एक फसल सीजन में वह 50 हजार के रसायनों का इस्तेमाल करते थे जो इस विधि में परिवर्तित होने के बाद उन्होंने बंद कर दिया है।

इस साल राकेश ने प्राकृतिक खेती के सभी सिद्धांतों का पूरी तरह पालन किया है। फसल के लिए

बचपन से किसानी से जुड़ा हूं पर जो परिणाम प्राकृतिक विधि से मिले हैं वह अदभुत हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विधि अपनाकर मेरे जैसे साथी किसान रसायनमुक्त होकर समूचे प्रदेश का गौरव बढ़ाएंगे।

खेत तैयार करने से लेकर फसल बोने और कटाई तक उन्होंने हर आदान का तय मात्रा में प्रयोग किया है। फलस्वरूप इस वर्ष उन्होंने 2 क्विंटल आलू, 1.8 क्विंटल मटर और 2.3 क्विंटल गोभी की उपज ली है। राकेश की देखा-देखी में गांव के अन्य युवा भी इस खेती की थोड़े-थोड़े हिस्से में शुरूआत कर रहे हैं। इन किसानों को राकेश अपने यहां से गोबर-गोमूत्र के साथ तैयार आदान भी दे रहे हैं ताकि यह किसान भी प्राकृतिक खेती में परिवर्तित होकर रसायनमुक्त खेती के अभियान को गति दे सकें।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 28 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 5 बीघा

फसलें –
ब्रोक्ली, फूलगोभी, पत्तागोभी, आलू, मटर, मूली, सरसों, पालक, धनिया, काला मटर

रसायनिक खेती – व्ययः 50,000, आयः 5,00,000

प्राकृतिक खेती – व्ययः 30,000, आयः 5,00,000

सूखाग्रस्त क्षेत्र के लिए ही संजीवनी है प्राकृतिक खेती

आंगद्वी - मो. 94189-25889

काजा विकास खंड के डैमुल से संबंध रखने वाले किसान आंगद्वी ने प्राकृतिक खेती से जिले में अपनी अलग पहचान कायम की है। खेती को जीविकोपार्जन का जरिया बनाने वाले आंगद्वी ने 2018 में प्राकृतिक खेती का दामन थामा और आज उन्होंने अपनी मेहनत के बूते सफल किसान के रूप में पहचान बनाई है।

आंगद्वी ने बताया कि वह खेती में नए प्रयोग करने के लिए तत्पर रहते हैं और इसके चलते वह कृषि अधिकारियों के लगातार संपर्क में रहते हैं। 2018 में उन्हें ब्लॉक स्तर के अधिकारियों से प्राकृतिक खेती के बारे में पता चला। इसके बाद कृषि विभाग की ओर से वह प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण शिविर के लिए नामित हुए। मन में इस खेती के प्रति जिज्ञासा और सवाल लेकर वह कुफरी में पद्मश्री सुभाष पालेकर जी के प्रशिक्षण शिविर का हिस्सा बने। 6 दिन के प्रशिक्षण में उन्हें अपने सवालों के जबाव और प्राकृतिक खेती विधि की पूरी जानकारी मिली।

घर आकर उन्होंने दोगली नस्ल की गाय के गोबर और गौमूत्र से बनाए विभिन्न आदानों का खेतों में छिड़काव करना शुरू कर दिया। खेत में लगाई मटर और आलू की फसल पर उन्होंने पालेकर जी के बताए अनुसार आदानों का प्रयोग किया। इससे उन्हें दोनों सब्जियों की गुणवत्तायुक्त फसल मिली। इसके बाद उन्होंने अन्य फसलों को भी प्राकृतिक विधि से उगाना प्रारंभ कर दिया और आगामी सालों में इस खेती के अधीन क्षेत्र को भी बढ़ाया।

आज आंगद्वी 5 बीघा क्षेत्र में प्राकृतिक तरीके से खेती कर रहे हैं। इस साल उन्होंने साढ़े 4 बीघा क्षेत्र में मटर की खेती की थी जिसकी उन्हें 2 टन पैदावार मिली है जो पहले के मुकाबले ज्यादा है। कोरोना वायरस के कारण हुए लॉकडाउन के बावजूद उन्हें औसतन 75 रूपए/किलो की दर से दाम मिला है। मटर और आलू के साथ वह अपने खेतों से जौ, मूली और शलगम की फसल भी ले रहे हैं।

आंगद्वी कहते हैं कि यह विधि पानी की कमी से जूझ रहे उनके क्षेत्र के लिए संजीवनी बनकर उभरी

पहले ही साल मुझे इस खेती विधि से चमत्कारिक परिणाम मिले। साल दर साल उपज और मुनाफा बढ़ रहा है। यह खेती किसान के लिए फायदे का सौदा सिद्ध हो रही है।

है। प्राकृतिक खेती से हम कम पानी में भी कई फसलें एक साथ ले पाने में सक्षम हुए हैं। पारंपरिक आलू और मटर के साथ अब हम अन्य फसलें भी उगा रहे हैं।

इस कठिन भौगोलिक क्षेत्र में आंगद्वी प्राकृतिक खेती का स्वत: प्रसार कर रहे हैं। वह अपने आस-पास के 10 गांवों में शिविर लगाकर किसानों को इस विधि के प्रति जागरूक कर चुके हैं। क्षेत्र के किसान इनके मार्गदर्शन में प्राकृतिक खेती तकनीक का अपनी जमीन पर प्रयोग कर रहे हैं।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन – 25 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन – 5 बीघा

फसलें –
आलू, मटर, जौ, मूली, शलगम

रसायनिक खेती – व्यय: 10,000, आय: 80,000

प्राकृतिक खेती – व्यय: 2,000, आय: 1,80,000

कृषि विभाग हिमाचल प्रदेश
विकास खण्ड लाहौल

NTS

कृषि विभाग, हिमाचल प्रदेश

शून्य लागत खेती के लिए किया प्रोत्साहित

सोलंग में जागरूकता शिविर आयोजित, कीटनाशक रहित खेती के दिए टिप्स

प्रदेश का प्राकृतिक खेती आधारित प्रथम जिला बनेगा लाहौल-स्पीति : वीरेंद्र कंवर

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। ऊना

कृषि मंत्री वीरेंद्र कंवर ने कहा कि लाहौल-स्पीति हिमाचल प्रदेश का प्रथम शत-प्रतिशत प्राकृतिक खेती आधारित जिला बनेगा।

शनिवार को जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में वीरेंद्र कंवर ने कहा कि लाहौल-स्पीति के अधिकतर किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है और कृषि विभाग जिला के किसानों को इस दिशा में ले जाने के लिए भरपूर सहायता कर रहा है। जिला को शत-प्रतिशत प्राकृतिक खेती के दायरे में लाने का लक्ष्य जल्द ही पूरा कर लिया जाएगा। कृषि मंत्री वीरेंद्र कंवर ने कहा कि प्रदेश सरकार पूरे राज्य में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रही है, ताकि किसान रसायनों की खेती से मुक्त हो सकें तथा उनकी आय भी बढ़े। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती को सर्टिफिकेशन करवाई जाएगी, ताकि किसानों को उनकी फसल का उचित दाम मिल सके। साथ ही प्राकृतिक खेती के उत्पादों को अलग बाजार उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जाएगा।

कहा, इस साल एक लाख किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने इस वर्ष 1 लाख किसान परिवारों को प्राकृतिक खेती के साथ जोड़ने का लक्ष्य रखा है तथा वर्ष 2022 तक पूरे हिमाचल प्रदेश को प्राकृतिक खेती के तहत लाया जाएगा। वीरेंद्र कंवर ने कहा कि अटल रोहतांग टनल खुलने के बाद जिला लाहौल-स्पीति के किसानों को काफी लाभ मिलेगा। अपना उत्पाद यहां के किसान सही समय पर मंडियों में पहुंचा पाएंगे, जिससे क्षेत्र की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी। उन्होंने कहा कि टनल खुलने के बाद पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी का सपना हो गया है, जिसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हिमाचल प्रदेश आभारी है।

खेत खलिहान तक पहुंची सूचना तकनीक

व्हाट्सएप से हो रहा है किसानों की समस्याओं का समाधान

प्रगतिशील किसान ने लॉकडाउन की चुनौती को अवसर में बदला

बागवानों को 17 लाख वर्ग मीटर सेब क्षेत्र के लिए एंटी हेलनेट उपलब्ध

प्राकृतिक खेती की मिसाल बनी यशी डोलमा

जगला फार्म में किसान किए जागरूक

ओमप्रकाश ने उठाया जहरमुक्त खेती का बीड़ा

गांव-गांव जाकर किसानों को सिखा रहे प्राकृतिक खेती

खट्टी लस्सी और जीवामृत के चमत्कारी परिणाम

मंत्री ने कृषि विज्ञान केंद्र का किया दौरा

पूर्ण प्राकृतिक खेती आधारित जिला बनाने का कार्य तेज हो: वीरेंद्र

प्राकृतिक खेती से जुड़ेंगे एक लाख किसान

मंत्री वीरेंद्र कंवर ने किया लाहुल-स्पीति के कुकुम सेरी कृषि विज्ञान केंद्र का दौरा

'सरकार करेगी प्राकृतिक उत्पादों के उचित विपणन को प्रभावकारी प्रणाली विकसित'

मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने उचित मांग और विपणन के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने पर बल दिया

शिमला, 15 दिसम्बर (ब्यूरो): प्राकृतिक उत्पादों का उचित विपणन और प्रमाणन सुनिश्चित करने के लिए एक प्रभावकारी प्रणाली विकसित की जाएगी ताकि किसानों को उनके उत्पादों के बेहतर मूल्य मिल सकें। यह बात मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने मंगलवार को प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश में सत्त खाद्य प्रणाली तंत्र की एक उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे। जयराम ठाकुर ने कहा कि प्राकृतिक उत्पादों की उचित मांग और विपणन के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिएं। उन्होंने कहा कि इससे प्राकृतिक उत्पादों की मांग बढ़ेगी और किसान प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित होंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वर्ष 2022 तक किसानों को आय दोगुना करने के लिए कृतसंकल्प हैं और प्राकृतिक खेती से इस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार ने अपने पहले ही बजट में 25 करोड़ रुपए का प्रावधान किया था। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती से राज्य के युवाओं के लिए कृषि एक लाभप्रद व्यवसाय बना है, जो इससे पूर्व बेहतर रोजगार अवसर और आजीविका के लिए प्रदेश से बाहर जा रहे थे। उन्होंने कहा कि पहले उत्पादन में कमी होने के डर से प्रदेश के किसान प्राकृतिक खेती को अपनाने के इच्छुक नहीं थे लेकिन अब राज्य के किसान प्राकृतिक खेती अपनाने में गहरी रुचि दिखा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संभालने में कृषि क्षेत्र ने अहम भूमिका निभाई है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने एफ.ए.ओ.आई.एन.आर.ए.ई. पर एनेबलिंग सस्टेनेबल फूड सिस्टम नामक किताब का विमोचन किया। मुख्य सचिव अनिल खाची, अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि निशा सिंह, एफ.ए.ओ. के भारत में प्रतिनिधि टोमियो सचिन्सी, परियोजना निदेशक राकेश कंवर, मिल्कफैड के अध्यक्ष निहाल सिंह शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव जे.सी. शर्मा, ग्रामीण विकास सचिव संदीप भटनागर, विशेष सचिव राजेश्वर चंदेल, निदेशक कृषि डा. नरेश कुमार बंधन, निदेशक बागवानी डा. जे.पी. शर्मा, निदेशक पशुपालन डा. अजमेर डोगरा, राज्य कृषि विपणन बोर्ड के प्रबंध निदेशक नरेश शर्मा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

शिमला : प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश में सत्त खाद्य प्रणाली तंत्र की उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित करते मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर। (निस)

प्राकृतिक खेती वातावरण के लिए बेहतर : कंवर

कृषि मंत्री वीरेंद्र कंवर ने कहा कि प्राकृतिक खेती द्वारा जहां एक तरफ किसानों के लिए बेहतर कीमत सुनिश्चित हुई है, वहीं यह स्वास्थ्य और वातावरण के लिए बहुत अच्छी साबित हुई है। मुख्य सचिव अनिल खाची ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार किसानों की समस्याओं को समझा जब उन्होंने उनकी आय वर्ष 2022 तक दोगुना करने की परिकल्पना की।

फ्रांस-जर्मनी से बैठक को किया संबोधित

फ्रांस के कृषि, खाद्य और पर्यावरण के राष्ट्रीय शोध संस्थान, विषय प्रयोगशाला विज्ञान, व्यवहार एवं समाज के उप निदेशक डॉ. अलिशान लोकोटो ने फ्रांस से बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती न केवल पर्यावरण के लिए बेहतर है, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए स्थानीय स्तर पर बेहतर समन्वय सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। आई.एफ.ओ.ए.एम. ऑर्गेनिक्स अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय जर्मनी गबोर फिगेस्की के वरिष्ठ प्रबंधक ग्लोबल पॉलिसी ने भी जर्मनी से ऑनलाइन माध्यम से सस्टेनेबल फूड सिस्टम विषय पर विशिष्ट टिप्पणियां दीं।

सस्टेनेबल फूड सिस्टम मैकेनिज्म पर दी प्रस्तुति

ग्राम दिशा ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी और प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के पूर्व सलाहकार आशीष गुप्ता ने इस अवसर पर सस्टेनेबल फूड सिस्टम मैकेनिज्म पर प्रस्तुति दी। एक्सेस लाइवलीहुड कन्सल्टिंग इंडिया लिमिटेड हैदराबाद के कार्यकारी निदेशक जी.वी. कृष्णा गोपाल ने इस अवसर पर प्रस्तुति दी।

जिला आतमा अधिकारी

डॉ0 शंकर दास शर्मा

जिला परियोजना उप-निदेशक आतमा/डी.पी.डी.-।

लाहौल-स्पीति जिला में किसानों का प्राकृतिक खेती के प्रति रूझान बढ़ रहा है। जिला के किसान इस विधि से फल-सब्जियां और फूल सफलतापूर्वक उगा रहे हैं। इस विधि में पारंगत अनुभवी किसानों के सहयोग से हमारी टीम जिला में प्राकृतिक खेती के प्रसार का कार्य कर रही है।

डॉ0 राजेन्द्र कुमार ठाकुर

जिला परियोजना उप-निदेशक आतमा/डी.पी.डी.-।।

कृषि विभाग में नौकरी करने के दौरान मैंने तरह-तरह के अनुभव पाये। मगर प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना में आने पर एक अलग सा सुकून महसूस कर रहा हूं। लाहौल-स्पीति के लोगों का प्राकृतिक खेती के प्रति झुकाव बढ़ रहा है। कम खर्चे वाली इस खेती से फसल उत्पादन में बढ़ोतरी और किसान आय का बढ़ना इस विधि की प्रासंगिकता को सार्थक कर रहा है।

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

केलांग

जितेन्द्र सिंह
बीटीएम

ज्योति
एटीएम

संजय कुमार
एटीएम

काजा

सुजाता नेगी
बीटीएम

दिनेश
एटीएम

संज्ञा सैन
एटीएम

प्राकृतिक खेती पर किये गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों के निष्कर्ष

- इस विधि से **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** गतिविधियों को बढ़ावा मिलता सिद्ध हुआ है। यह **एंजाइम** सीधे मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। 'रासायनिक' और 'जैविक खेती' की तुलना में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** की गतिविधि (DHA) उच्चतम ($8.4\ \mu g\ TPF g^{-1}\ h^{-1}$) दर्ज की गई, यानि मिट्टी की गुणवत्ता फसल उत्पादन के बाद बढ़ती प्रतीत हुई है।

- इसके अलावा, **क्षारीय फॉस्फेटेज** और **अम्लीय फॉस्फेटेज** जैसी अन्य **एंजाइम** गतिविधियों को भी 'प्राकृतिक खेती' के तहत 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' से अधिकतम ($112\ \mu g\ TPF g^{-1}\ h^{-1}$) दर्ज किया गया। अतः **SPNF** प्रणाली 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले में बढ़ी हुई **एंजाइम** गतिविधियों द्वारा मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार करने हेतु अधिक कारगर सिद्ध हुई है।

- **SPNF** प्रणाली में देसी केंचुओं की आबादी में भी अधिक वृद्धि देखी गई। 'प्राकृतिक खेती' के तहत विभिन्न उच्च घनत्व वाले सेब के बागानों में, केंचुओं की आबादी उच्चतम दर्ज की गई जो मिट्टी के 0-15 सेमी गहराई में 32 केंचुआ / फीट^2 थी। ये केंचुआ प्रजाति, मिट्टी के स्वास्थ्य और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मृदा को **नाइट्रोजन, फास्फोरस** और **पोटेशियम** आदि जैसे कई पोषक तत्वों द्वारा समृद्ध बनाते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** में प्रमुख रूप से बैक्टीरिया, एंजाइम, पौधे के अपघटित अवशेष, केंचुआ कुकुन, पशुओं एवं अन्य जीवों के अपशिष्ट इत्यादि जैविक मिश्रण के रूप में विद्यमान होते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** आसानी से उपलब्ध पानी में घुलनशील पौधे पोषक तत्वों का बहुत समृद्ध स्रोत हैं, जो कि उपरी मिट्टी सतह में सामान्य रूप में मौजूद ह्यूमस (Humus) की तुलना में अधिक होते हैं।

- प्रदेश के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में यह खेती विधि मिट्टी में नमी की मात्रा, 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले 1.5-7.9% अधिक बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है। **SPNF** खेती के तहत किए गए एक शोध में मटर-टमाटर की फसल उत्पादन के एक साल उपरान्त मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में 329 कि.ग्रा./है० से 358 कि.ग्रा./है० की वृद्धि दर्ज की गई।

Comparative Economics of SPNF and CF Apple in HP (Rs/ha)

* अभी तक किए गए विभागीय तुलनात्मक अध्ययन में प्राकृतिक खेती से गैर – प्राकृतिक खेती की तुलना में बागवानी लागत में कमी दर्ज की गई है। प्राकृतिक खेती पद्धति से बागवानों का शुद्ध लाभ बढ़ा है।

Comparative disease incidence in SPNF & CF Apple in Shimla, Sirmour District during 2020

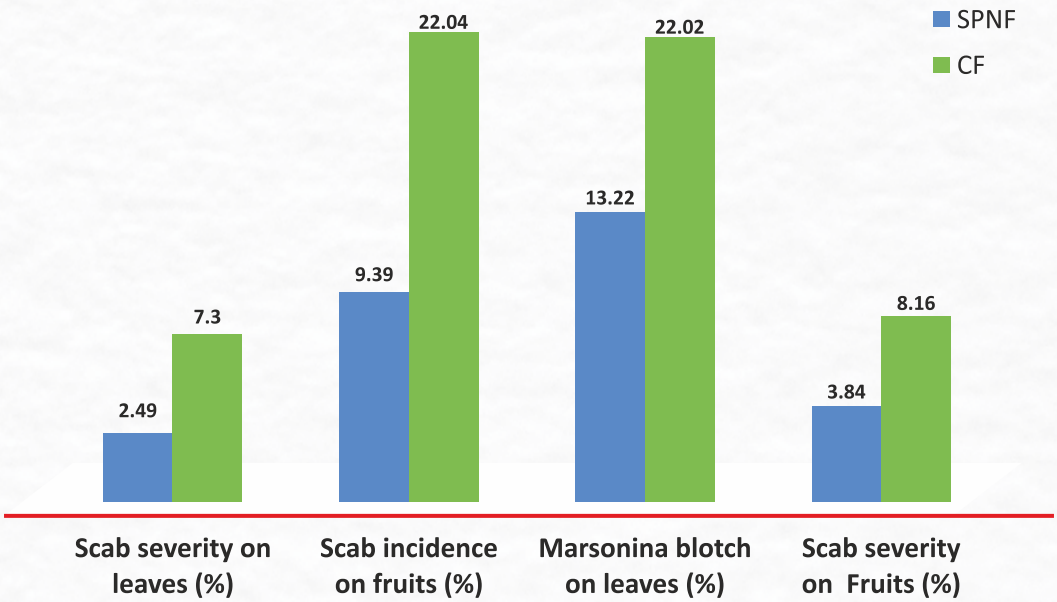

* अभी तक किए गए विभागीय तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया है कि प्राकृतिक खेती बागीचों में गैर – प्राकृतिक खेती बागीचों की अपेक्षा सेब पपड़ी रोग (Scab) और आकस्मिक पतझड़ रोग (Premature Leaf Fall) का प्रकोप कम दर्ज किया गया है।

जिला स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

क्रम संख्या	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
1		जिला परियोजना निदेशक आतमा			
2	डॉ० शंकर दास शर्मा	जिला परियोजना उप–निदेशक–I	94180-92011	13	41
3	डॉ० राजेन्द्र कुमार ठाकुर	जिला परियोजना उप–निदेशक–II	94185-60705	28	

खण्ड-स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

विकास खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
केलांग	जितेन्द्र सिंह	बीटीएम	94181-11982	10	28
	ज्योति	एटीएम	94189-97435	8	
	संजय कुमार	एटीएम	70188&99662	10	
काजा	सुजाता नेगी	बीटीएम	94594-80931	4	13
	दिनेश	एटीएम	86792-00161	5	
	संज्ञा सैन	एटीएम	89883-49963	4	

7,451 किसान

4,530 हैक्टेयर भूमि

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई

कृषि भवन, शिमला–5 हि.प्र. | दूरभाष 0177 2830767 | ईमेलः spnf-hp@gov.in

facebook.com/SPNFHP twitter.com/spnfhp youtube.com/SPNFHP

Designed by : Tinge Media PR Pvt. Ltd. +91-981 682 9937

प्रतियां - 1000, वर्ष 2021